

सिनेमा, नाटक और जनसंस्कृति

डा. सुधामणि.एस.

सह प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,

सरकारी रामनारायण चेल्लाराम वाणिज्य तथा प्रबंध महाविद्यालय, रेस कोर्स रोड, बेंगलूरु. 560001

मो- 8971843352 ईमेल आईडी: sudhamani905@gmail.com

प्रस्तावना : सिनेमा और नाटक भारतीय जनसंस्कृति के जीवनस्तंभ हैं। सामाजिक, यथार्थ, परंपराओं और सांस्कृतिक मूल्यों को दर्शाते हैं। सिनेमा और नाटक भारतीय जनसंस्कृति के जीवंत माध्यम हैं जो सदियों से सामाजिक चेतना की नींव रखी, सिनेमा ने उसे तकनीकी विस्तार दिया, जो समाज का आइना बनकर मनोरंजन के साथ-साथ परिवर्तन के सशक्त साधन के रूप में स्थापित है। भारतीय जनसंस्कृति के निर्माण और विकास में सिनेमा तथा नाटक की ऐतिहासिक एवं समकालीन भूमिका महत्वपूर्ण है। नाटक ने सामाजिक चेतना की नींव रखी और सिनेमा ने उसे तकनीकी विस्तार दिया।

बीजक शब्द : जनसंस्कृति, नाटक और रंगमंच, सिनेमा, चलचित्र, सामाजिक सिनेमा

सिनेमा की परिभाषा : भाषा की ही तरह, सिनेमा एक ऐसा व्यापक तत्व है जो किसी विशिष्ट समय और स्थान में मानव होने के अर्थ को समाहित करता है। यह कहते हैं कि यह दुनिया के प्रति हमारे अनुभव को प्रभावित करता है, चीजों को समझने में हमारी मदद करता है, तथा दुनिया को मानवता का सुंदर रूप देने में मदद करता है।

सिनेमा चलते हुए चित्रों के माध्यम से कहानियों, भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने वाली एक लोकप्रिय कला, तकनीकी और व्यवसाय है। इसे " चलचित्र " भी कहते हैं। यह साहित्य, संगीत, नृत्य और अभिनय का मिश्रण है। यह दर्शकों को मनोरंजन करने के साथ-साथ समाज का दर्पण बनकर वास्तविकता का परिचय कराता है तथा सपनों को साकार करने का माध्यम भी कह सकते हैं।

सिनेमा मनोरंजन, शिक्षा और सामाजिक, जागरूकता का एक शक्तिशाली, माध्यम है जो समाज का दर्पण बनकर संस्कृति को सुरक्षित करने और मानवीय दृष्टिकोण को व्यापक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है तथा रचनात्मकता को प्रेरित करता है, लोगों को जोड़ता है।

भारत का रंगमंच- भारत में रंगमंच की उत्पत्ति का इतिहास अत्यंत विवादास्पद है। कुछ विद्वानों के अनुसार, भारतीय रंगमंच का उद्भव 15वीं शताब्दी ईसा पूर्व में हुआ था। ऋग्वेद जैसे वैदिक ग्रंथ यज्ञ समारोहों के दौरान नाट्य प्रस्तुतियों के प्रमाण प्रदान करते हैं। इन ग्रंथों में वर्णित संवाद एक व्यक्ति के एकालाप से लेकर तीन व्यक्तियों के संवाद तक हैं, जैसे कि इंद्र, इंद्रानी और वृषकापी के बीच का संवाद। ये संवाद न केवल धार्मिक संदर्भ में हैं, बल्कि धर्मनिरपेक्ष भी हैं।

नाट्यशास्त्र, जिसे 200 ईसा पूर्व का माना जाता है, हालांकि विभिन्न शिक्षकों का कथन है। संस्कृत नाटक के सबसे पुराने जीवित अंश पहली शताब्दी ईस्वी से मिलते हैं संस्कृत रंगमंच के प्रमाण का प्रमुख स्रोत नाट्यशास्त्र है, जो एक ग्रंथ है जिसकी रचना तिथि अनिश्चित है (अनुमान 200 ईसा पूर्व से 200 ईस्वी तक हैं) और जिसका लेखन भरत मुनि को समर्पित है। यह ग्रंथ प्राचीन विश्व में नाट्यकला का सबसे संपूर्ण ग्रंथ है। सातवीं शताब्दी के अंत तक, रंगमंच कला और शास्त्रीय संस्कृत नाटकों के प्रति सराहना को एक परिष्कृत विश्वदृष्टि का अनिवार्य हिस्सा माना जाता था। कालिदास को भारत का सर्वोत्कृष्ट संस्कृत नाटककार माना जाता है, जिन्होंने लगभग चौथी शताब्दी ईस्वी से पाँचवीं शताब्दी ईस्वी के बीच रचनाएँ कीं। अगले महान भारतीय नाटककार भवभूति (लगभग 7वीं शताब्दी ईस्वी) थे। उन्होंने निम्नलिखित तीन नाटक लिखे: मालती-

माधव, महावीरचरित और उत्तर रामचरित। इन तीनों में से अंतिम दो नाटकों में रामायण महाकाव्य का पूर्ण सार समाहित है। शक्तिशाली भारतीय सम्राट हर्ष (606-648) को तीन नाटकों की रचना का श्रेय दिया जाता है: हास्य नाटक रत्नावली, प्रियदर्शिका और बौद्ध नाटक नागानंद। कुछ विद्वानों के अनुसार, भारत के शास्त्रीय रंगमंच का सबसे प्रारंभिक रूप संस्कृत रंगमंच था, जो ग्रीक और रोमन रंगमंच के विकास के बाद अस्तित्व में आया। आक्रमणकारी सेना ने ग्रीक शैली के नाटक मंचित किए और भारतीयों ने इस प्रदर्शन कला को अपनाया।

मध्यकालीन भारत में रंगमंच- भारत की कलात्मक पहचान उसकी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टियों में गहराई से निहित है। इसी कारण भारतीय सांस्कृतिक प्रथाओं को समझना आवश्यक है क्योंकि वे इस समय के कलाकारों और प्रदर्शनों से सीधे संबंधित हैं। नृत्य, संगीत और पाठ सहित प्रदर्शन भारतीय संस्कृति के प्रति भक्ति की अभिव्यक्ति करती हैं। भरत नाट्यशास्त्र, जिसे शास्त्र भी कहा जाता है, वेशभूषा, हाव-भाव, शरीर की मुद्राओं और मेकअप को सूचीबद्ध करने के लिए लिखा गया था। इसमें अनुपयुक्त समझे जाने वाले कथानकों की सूची भी शामिल है और यह सबसे पूर्ण दस्तावेज भी है। अधिकांश भारतीय रंगमंच में कोई दृश्यावली नहीं होती थी। आमतौर पर पीतल के दीपक जैसे कुछ सहायक उपकरण होते थे।

ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में रंगमंच- ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के तहत, आधुनिक भारतीय रंगमंच की शुरुआत बेलगाछिया में एक रंगमंच की स्थापना के साथ हुई। इस काल में रचित और मंचित शुरुआती नाटकों में से एक माइकल मधुसूदन दत्त द्वारा लिखित 'बुरो शालीखेर घरे रोआ' (1860) था, जो बंगाली भाषा में था। लगभग उसी समय, दीनबंधु मित्रा द्वारा लिखित बंगाली नाटक 'नील दर्पण' (1858-59, पहला व्यावसायिक मंचन 1872 में गिरीश चंद्र घोष द्वारा कलकत्ता के राष्ट्रीय रंगमंच में) ने ग्रामीण बंगाल में नील की खेती की भयावहता और त्रासदी को दर्शाने के लिए प्रशंसा और विवाद दोनों को आकर्षित किया और नील विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रवींद्रनाथ टैगोर एक अग्रणी आधुनिक नाटककार थे, जिन्होंने राष्ट्रवाद, पहचान, अध्यात्मवाद और भौतिक लालच जैसे विषयों की पड़ताल और उन पर प्रश्न उठाने वाले नाटक लिखे।

जनसंस्कृति' (Janasamskriti) का अर्थ है आम जनता की संस्कृति, जो लोक कलाओं, परंपराओं, और सामूहिक जीवन से जुड़ी होती है। यह अभिजात वर्ग के बजाय साधारण लोगों के विचारों, गीतों और नाटकों को प्रदर्शित करती है। यह शब्द अक्सर भारतीय लोक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों और वामपंथी या जन-केंद्रित सांस्कृतिक आंदोलनों के संदर्भ में उपयोग किया जाता है। सांस्कृतिक मूल्यों और विचारों का एक समूह जो किसी आबादी के सामान्य संपर्क से उत्पन्न होता है। वही सांस्कृतिक गतिविधियाँ, संचार माध्यम, संगीत और कला आदि। जन संस्कृति यह आधुनिक संचार माध्यमों के माध्यम से ही संभव हो पाता है। संस्कृति व्यक्तियों में संचारित होती है, न कि लोगों की दैनिक बातचीत से उत्पन्न होती है। जन संस्कृति व्यक्तिवाद के उदारवादी मूल्यों को पुनः उत्पन्न करने और एक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने की प्रवृत्ति रखती है।

जनसंस्कृति के मुख्य पहलू: लोक और सामुदायिक भावना: इसमें लोकगीत, नृत्य, नाटकों (जैसे पारसी थिएटर) और पारंपरिक कलाओं को शामिल किया जाता है, जो समुदाय की पहचान बताते हैं।

कला का जन-माध्यम: जनसंस्कृति फिल्मों और दृश्यों के माध्यम से लोक कथाओं को एक लोकप्रिय माध्यम के रूप में स्थापित करती है।
सांस्कृतिक आंदोलन: यह शब्द केरल में 'जनसंस्कृति' जैसे मंचों के लिए भी उपयोग होता है जो कला और सांस्कृतिक कार्यक्रमों (सरगोत्सवम) को बढ़ावा देते हैं।

भारतीय दृष्टिकोण: यह जनजातीय और स्थानीय परंपराओं (जैसे 'मध्यवर्ती भारत: जनसंस्कृति का भारतीय दृष्टिकोण') को शामिल करते हुए भारतीय समाज की विविधता को उजागर करती है।

जन संस्कृति (Mass Culture) उन सांस्कृतिक मूल्यों, विश्वासों और वस्तुओं का समूह है, जिन्हें आधुनिक जनसंचार माध्यमों (मीडिया, इंटरनेट, फिल्म) के जरिए समाज के एक बड़े हिस्से द्वारा अपनाया और उपभोग किया जाता है। यह तकनीकी विकास और उपभोक्तावाद से प्रेरित है, जो स्थानीय लोक परंपराओं के विपरीत, व्यापक स्तर पर मानकीकृत (standardized) मनोरंजन और जीवनशैली को बढ़ावा देती है।

जन संस्कृति की मुख्य विशेषताएं:

व्यापक प्रसार और खपत: इसका उत्पादन बड़ी कंपनियों द्वारा लाभ कमाने के लिए किया जाता है और यह मीडिया के माध्यम से जनता तक पहुंचती है।

मानकीकरण : संस्कृति के विभिन्न रूपों (जैसे- संगीत, फिल्में) को सरल और एकसमान बनाया जाता है ताकि वे अधिक-से-अधिक लोगों को पसंद आए।

उपभोक्तावाद: यह विज्ञापनों और फैशन के माध्यम से लोगों को उपभोग के लिए प्रेरित करती है।

लोक संस्कृति से भिन्न: यह पारंपरिक, स्थानीय लोक संस्कृति के विपरीत है, जिसमें समुदाय की अपनी अनूठी परंपराएं होती हैं।

आधुनिकता का उत्पाद: यह शहरीकरण और औद्योगीकरण के साथ विकसित हुई, जो पूरे विश्व में साझा अनुभवों को आकार देती है।

निष्कर्ष : सिनेमा और नाटक को केवल मनोरंजन न मानकर, समाज के दर्पण और परिवर्तन के सशक्त माध्यम के रूप में स्थापित किया गया है। सिनेमा, नाटक या रंगमंच तथा जनसंस्कृति तो समाज को उत्तम मार्गदर्शन दिया। ऐतिहासिक, धार्मिक, पौराणिक तत्वों का प्रतिपादन भी किया है।

संदर्भ सूची:

1) https://www.google.com/search?q=cinema+in+hindi&rlz=1C1GIGM_enIN973IN973&oq=&aqs=chrome.0.35i39i36218.3774279j0j15&sourceid=chrome&ie=UTF-8

2) [sanskriti+in+hindi&sca_esv=881c8779ce9071b0&rlz=1C1GIGM_enIN973IN973&biw=1366&bih=580&sxsrf=ANbLn6mjRvsjzjMnZmLPMM3DqYLDpeUgQ%3A1774451489723&ei=IfvDabfoK76](https://www.google.com/search?q=sanskriti+in+hindi&sca_esv=881c8779ce9071b0&rlz=1C1GIGM_enIN973IN973&biw=1366&bih=580&sxsrf=ANbLn6mjRvsjzjMnZmLPMM3DqYLDpeUgQ%3A1774451489723&ei=IfvDabfoK76)

3) https://www.google.com/search?q=%E0%A4%9C%E0%A4%A8+%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%95%E0%A5%83%E0%A4%BF+%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%BE+%E0%A4%B9%E0%A5%88&rlz=1C1GIGM_enIN973IN973&oq=janasamskruti+ki+paribhaashaa+in+hindi&aqs=chrome.1.69i57j0i512i546l3j0i751j0i512i546